ISSN: 2349-6002

पुराणों में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा: एक अवलोकन ।

अमर सिंह दरोगा[1], डॉ पंकज जी. त्रिवेदी[2]
[1]शोध छात्र, महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर
[2]मार्गदर्शक, महिला महाविद्यालय पालीताणा
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191127-459

भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास क्रमिक रूप से सहस्रों शताब्दियों से होता आ रहा है । जो निश्चित रूप से विश्व गुरु होने का कारण रहा है । भारत की विपुला ज्ञान परम्परा ऋषि परम्परा की अगाध साधना का प्रति फल है ,जिसमें पुराणों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी रहा है। पुराण केवल मात्र धार्मिक आस्था के ग्रंथ नहीं हैं, अपितु वे भारतीय सभ्यता की दार्शनिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक चेतना के सशक्त संवाहक हैं। प्रस्तुत किए जा रहे शोध पत्र का उद्देश्य पुराणों में व्याप्त भारतीय ज्ञान परंपरा का समालोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।पुराणों में सृष्टि-तत्व, काल-दर्शन, कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धांत, धर्म एवं नीति, भक्ति और योग, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, भूगोल तथा सामाजिक संरचना से संबंधित गहन अवधारणाएँ प्राप्त होती हैं। ये ग्रंथ आख्यानों के माध्यम से दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विषयों को समाज के लिए बोधगम्य बनाते हैं, जिसके कारण से ज्ञान का समाज में प्रसार हो पाया है ।

पुराण' का शाब्दिक अर्थ है - 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। 'पुरा' का अर्थ है - अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है - कहना, बताना एवं वैदिक वाङ्मय में तो "प्राचीन :वृत्तान्तः" ऐसा कहा गया है ।

भारत की सांस्कृतिक विरासत का अर्थ है कि हिन्दू संस्कृति के वे विशिष्ट धर्मग्रन्थ जिनमें सृष्टि रचना से लेकर प्रलय तक का इतिहास-वर्णन शब्दों से किया गया हो, पुराण कहे जाते है। पुराण शब्द का उल्लेख वैदिक युग के वेद सहित प्राचीन साहित्य में भी पाया जाता है अत: ये सबसे पुरातन (पुराण) माने जा सकते हैं। प्राचीन समय में उत्तरोत्तर कही गई बातें पुराण कही जा सकती है । इससे ये ज्ञात होता है कि पुराणों की रचना एक साथ तो नहीं हुई है । अथर्ववेद के अनुसार पुराण पत्रापगमागन्नतरम् अर्थात् पुराणों का आविर्भाव ऋक्, साम, यजुस् औद छन्द के साथ ही हुआ था। शतपथ ब्राह्मण (१४.३.३.१३) में तो पुराणवाग्ङमय को वेद ही कहा गया है। छान्दोग्य उपनिषद् (इतिहास पुराणं पंचम वेदानां वेदम् ७.१.२) ने भी पुराण को वेद कहा है। बृहदारण्यकोपनिषद् तथा महाभारत में कहा गया है कि "इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्" अर्थात् वेद का अर्थविस्तार पुराण के द्वारा करना चाहिये। इनसे यह स्पष्ट है कि वैदिक काल में पुराण तथा इतिहास को समान स्तर पर रखा गया है।

पुराण प्राचीन काल से विद्यमान हैं और शाश्वत सिद्धांतों के ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण सदा नवीन बने रहते हैं। पुराणों में समाहित कालखंड विशाल है और इनमें अनेक सृष्टि और प्रलय के वर्णन मिलते हैं। इतने व्यापक संदर्भ में, वे मूलभूत सिद्धांत जो अपरिवर्तनीय हैं, वह ज्ञान जो व्यक्ति को अपने पुरुषार्थ को पूर्ण करने में सहायक है, जो इष्टदेव के प्रति भक्ति और ज्ञान का विकास करता है, और वे मूल्य और कथाएँ जो व्यक्ति को सभी के हित में लाभकारी कर्म करने के लिए प्रेरित करती हैं, उनका संरक्षण और प्रसार करना अनिवार्य हो जाता है। अपने नाम के अनुरूप, पुराण और उनका ज्ञान कालजयी हैं , क्योंकि यह पहले से ही अस्तित्व में था (पुराआपि), इसलिए इसे पुराणम् के नाम से जाना जाता है। (ब्रह्मांड पुराण, खंड 1, अध्याय 1) यास्क ने अपने निरुक्त 3.19 में पुराणों की व्युत्पत्ति का उल्लेख इस प्रकार किया है: "पुरा नवं भवति इति पुराणं" — "पुराना नया हो जाता है, यही पुराण है"।

भारत में 18 महापुराण और 18 उपपुराण हैं। इनके अलावा, भारत के विभिन्न भागों में कई स्थल पुराण भी हैं। महर्षि वेद व्यास - पुराणों के संकलनकर्ता नीचे दिए गए सरल श्लोक के माध्यम से 18 महापुराणों के नाम याद रखे जा सकते है।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।

म-२, भ-२, ब्र-३, व-४।

1.मत्स्यपुराण 2. मार्कण्डेय पुराण 3. भागवत पुराण 4. भविष्य पुराण 4. ब्रह्म पुराण 5. ब्रह्मवैवर्त पुराण 6. ब्रह्मांड पुराण 7.विष्णुपुराण 8.वराहपुराण 9. वामन पुराण 10.वायु/शिव पुराण 11. अग्निपुराण 12. नारद पुराण 13. पद्म पुराण 14. लिंग पुराण 15.. लिंग पुराण 16.गरुड़ पुराण 17 कूर्म पुराण 18. स्कन्द पुराण पुराण ।

इसके साथ ही श्रीमद् भागवतम् के श्लोक 1.4.20 में कहा गया पुराण लक्षण बताया है ।

पुराण लक्षण: *सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।*

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्

॥

पुराणों के पंचलक्षण

सर्ग – सृष्टि

प्रतिसर्ग – बाद की रचनाएँ और उनका विघटन । सर्ग और प्रतिसर्ग संबंधी खंडों में ब्रह्मांड की उत्पत्ति, ब्रह्मांड को निर्मित करने वाले विभिन्न तत्वों और उनके विकास का वर्णन किया गया है। भौतिक वास्तविकता और पृथ्वी की रचना का वर्णन किया गया है। इसके बाद, भगवान ब्रह्मा से विभिन्न प्राणियों की रचना और विकास का वर्णन किया गया है।

भारतीय दृष्टिकोण से, सृष्टि एक चक्रीय घटना है जो विनाश के साथ बार-बार घटित होती है। पुराणों में ब्रह्मांड के विभिन्न प्रकार के विनाशों और उनके पुन: सृजन की प्रक्रिया का वर्णन है। इन अध्यायों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के उन विषयों को शामिल किया गया है जिनका अध्ययन हम आज भौतिकी, ब्रह्मांड विज्ञान, रसायन विज्ञान, विकासवादी जीव विज्ञान, भूविज्ञान और पृथ्वी विज्ञान जैसे विषयों में करते हैं।

वंश – ऋषियों और देवताओं की वंशावली और उसका विवरण – उनकी उत्पत्ति, उनके जीवन की कहानियाँ और वंश परंपरा। पुराण मानव-केंद्रित नहीं हैं, इसलिए वे मानव उत्पत्ति और इतिहास को अन्य प्राणियों के इतिहास के संदर्भ में देखते हैं। इनमें वास्तविकता के विकास में विभिन्न प्राणियों के सह-विकास और अंतःक्रिया के बारे में बताया गया है।

मन्वंतर – पुराणों में समय की ब्रह्मांडीय इकाइयों और विभिन्न घटनाओं के घटित होने के समयमानों का वर्णन किया गया है। इस खंड में मनु और उनके वंश, मनु द्वारा वर्णित आचार संहिता और सामाजिक प्रथाओं का भी उल्लेख है। इसमें वर्ण-आश्रम धर्म विभिन्न वर्गों और जीवन के विभिन्न चरणों में लोगों के कर्तव्य का भी वर्णन है।

वंशानुचरित – विभिन्न राजाओं और उनके राजवंशों तथा उनकी जीवन की कहानियों का इतिहास। हम उन राजवंशों के बारे में सीखते हैं जिन्होंने शासन किया और उनके जीवन की कहानियाँ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सिद्धांतों को दर्शाती हैं। वंश के साथ-साथ, ये कहानियाँ भारत के सभ्यतागत इतिहास को बताने में मदद करती हैं और स्वधर्म का पालन करने में सहायक सर्वोत्तम प्रथाओं को भी दर्शाती है। इन पांचों लक्षणों के अध्ययन के पश्चात् हम पुराण वर्णित विषयों को उजागर कर सकतें हैं।

पुराण और भारतीय ज्ञान प्रणाली

ज्ञान और वैज्ञानिक प्रगति किसी भी समाज की आधारभूत संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वास्तविकता, प्रकृति, मानव जीवन और उसके सिद्धांतों का ज्ञान, समाज द्वारा विकसित विभिन्न सामाजिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रणालियों का अभिन्न अंग है। इन ज्ञान प्रणालियों और विज्ञानों के प्रति समर्पित लोगों के प्रयासों से ही यह ज्ञान, संस्कृति और सभ्यता आगे बढ़ती है।

भारतीय संदर्भ में, वेद ज्ञान और विज्ञान के प्रमुख स्रोत हैं (वेद शब्दकी उत्पत्ति 'विदज्ञाने धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'जानना')। वेदों का अध्ययन शुरू करने से पहले पर्याप्त ज्ञान और प्रशिक्षण, जैसे कि वेदांगों का ज्ञान, आवश्यक है। दूसरी ओर, पुराणों में वेदों का ज्ञान इस प्रकार वर्णित है जिसे आम लोग समझ सकते हैं और उससे जुड़ सकते हैं। इतिहास और पुराणों के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। इतिहास पुराणों की कथाएँ और परंपराएँ सहस्राब्दियों से चली आ रही हैं और सभ्यता की निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये कथाएँ लोगों के बीच अपेक्षाकृत प्रसिद्ध हैं और उनके हृदय और मन में बसी हुई हैं। इस लेख श्रृंखला में हम पुराणों को भारतीय ज्ञान प्रणालियों के विश्वकोशीय ग्रंथों के रूप में देखेंगे।

पुराण लोकप्रिय ज्ञान के स्रोत के रूप में

पुराणों को ज्ञान प्रणाली के रूप में जानने हेतु विज्ञान से संबंधित कोई पत्रिका, लेख या सिद्धांत, भले ही सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो, उसे केवल वही शोधकर्ता या वैज्ञानिक समझ सकते हैं और उसका उपयोग कर सकते हैं जिन्हें उस क्षेत्र का पूर्व ज्ञान और पृष्ठभूमि हो। एक आम व्यक्ति शायद उसे समझ न पाए या उसमें निहित विशिष्ट विवरणों की सराहना न कर पाए। हालांकि, वैज्ञानिक खोज के लाभ केवल वैज्ञानिकों के उस समूह तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि सभी के लिए उपलब्ध हैं। कोई सोच सकता है कि ऐसा कैसे होता है। विज्ञान संचार और प्रौद्योगिकी में विज्ञान के अनुप्रयोग के माध्यम से ही यह ज्ञान, विज्ञान की खोजों और उनके अनुप्रयोगों को जनमानस तक पहुँचाने में मदद मिली है। प्रौद्योगिकियां और ढाँचे इन सिद्धांतों को दैनिक जीवन में लागू करने में मदद करते हैं और इस प्रकार विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लाभ सभी तक पहुँचते हैं। विज्ञान संचार लोगों को अवधारणाओं को समझने, उनका उपयोग अपने आसपास की दुनिया की व्याख्या करने

और हमें नवीनतम खोजों के बारे में जागरूक और उत्साहित रखने में मदद करता है। इससे लोगों में विज्ञान की खोजों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है और हमें इससे जुड़ने के लिए प्रेरित भी किया जाता है, उदाहरण के लिए विज्ञान में आगे की पढ़ाई करके, इसके विकास में योगदान देकर या केवल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके। एक समाज के रूप में हम विज्ञान की प्रासंगिकता को समझते हैं और इसमें निवेश करने में सक्षम हैं, जिससे समाज को लाभ होता है। वस्तुनिष्ठता और अनुभवजन्य प्रमाण जैसे विज्ञान के मूल में निहित मूल्य हमारी सोच, हमारे विश्वदृष्टि और हमारे समाज की प्रणालियों के कामकाज का हिस्सा बन जाते हैं। इस प्रकार हम विज्ञान पर आधारित एक "संस्कृति" का अनुसरण करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों के संदर्भ में पुराणों ने भी ऐसी ही भूमिका निभाई है। ये वेदों और विभिन्न भारतीय ज्ञान प्रणालियों के सार को समाहित करने वाले ज्ञानकोशीय ग्रंथ हैं। इनमें कथा-आधारित शैली का प्रयोग किया गया है और ये देवताओं, ऋषियों, संतों और राजाओं के संवादों के रूप में लिखे गए हैं। ये मानव-केंद्रित नहीं हैं और इनमें विभिन्न प्राणियों और सृष्टि का वर्णन मिलता है। रस और कल्पना को मोहित करने वाली कहानियों से परिपूर्ण, इनमें न केवल विज्ञान और भारतीय ज्ञान प्रणालियों के सिद्धांत और नियम समाहित हैं, बल्कि अनुष्ठानों, परंपराओं और संस्कारों के माध्यम से उनके अनुप्रयोगों का विस्तृत वर्णन भी है, जिससे लोगों को लाभ होता है। इनमें धर्म, व्यावहारिक ज्ञान, सामाजिक आचरण, योग और मानव कल्याण से संबंधित विषयों का भी वर्णन है। महर्षि व्यास और गुरु परंपरा की कृपा से ही विज्ञान को लोकप्रिय कथाओं और व्यावहारिक विधियों के माध्यम से हर घर तक पहुँचाया गया है।

ब्रह्मांडीय प्रलय के दौरान मनु और सप्तऋषियों को ले जाते हुए भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार का वर्णन।इस प्रलय के वर्णन में चीनी, ग्रीक, नॉर्स और दक्षिण अमेरिकी सभ्यताओं में वर्णित महान बाढ़ से कई समानताएँ देखने को मिलती है ।

पुराणों में आयुर्वेद

पुराणों के माध्यम से ही आयुर्वेद चिकित्सा के अध्ययन का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया गया। अनेक पुराणों में निःशुल्क चिकित्सालयों की स्थापना से होने वाले लाभों की प्रशंसा की गई है। इससे उस समय चिकित्सा देखभाल के महत्व और उनके प्रति उपलब्ध सुविधाओं का पता चलता है। हम यह जान सकते हैं कि उन दिनों रोगियों को दवा के साथ-साथ भोजन भी मुफ्त में दिया जाता था। उन दिनों आयुर्वेद की प्रगति स्थिर थी। आयुर्वेद को वेदों और शास्त्रों के अध्ययन के साथ एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता था।

पुराणों में कला एवं शिल्प: भारत में चित्रकला का एक प्राचीन स्रोत विष्णुधर्मोत्तर पुराण है। जो कि एक उपपुराण है। इसके 'चित्रसूत्र' नामक अध्याय में चित्रकला का महत्व इस प्रकार उल्लिखित है –

कलानां प्रवरं चित्रम् धर्मार्थ काम मोक्षदं ।

मांगल्य प्रथम हि तद् गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्॥

(अर्थ - कलाओं में चित्रकला सबसे ऊँची है जिसमें धर्म , अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः जिस घर में चित्रों की प्रतिष्ठा अधिक रहती है, वहाँ सदा मंगल की उपस्थिति मानी गई है।)

अग्निपुराण में समस्त विद्याओं का समावेश होने के कारण अनेक विद्वानों ने इसे 'भारतीय संस्कति का विश्वकोश' कहा जाता है। इसमें देवालय और प्रासाद निर्माण की सम्पूर्ण जानकारी उल्लिखित भूगोल, गणित, फलित-ज्योतिष, विवाह, मृत्यु, शकुनविद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण, कोशनिर्माण आदि नाना विषयों का वर्णन है। इसमें प्राचीन भारत की समस्त परा एवं अपरा विद्याओं का संकलन है।

आग्नेय हि पुराणेस्मिन सर्वा विद्याः प्रदर्शिताः

इस प्रकार पौराणिक ग्रन्थों में कला एवं शिल्प के उन्नयन के साक्ष्य दृष्टगत होता है।

पुराणों में दार्शनिक ज्ञान

पुराणों में भारतीय दर्शन के प्रमुख सिद्धांत अत्यंत सहज रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। आत्मा और परमात्मा की अवधारणा, कर्म सिद्धांत, पुनर्जन्म, माया और मोक्ष जैसे गूढ़ विषय कथात्मक शैली में समझाए गए हैं।

भागवत पुराण में भक्ति को ज्ञान और कर्म का सर्वोच्च रूप माना गया है। विष्णु पुराण में सृष्टि और ईश्वर की सर्वव्यापकता पर प्रकाश डाला गया है। पुराणों का दर्शन मानव को अहंकार से मुक्त कर करुणा और सेवा की ओर प्रेरित करता है।

पुराणों में वैज्ञानिक दृष्टि

सृष्टि विज्ञान

पुराणों में सृष्टि की उत्पत्ति और विकास का वर्णन मिलता है। कल्प, मन्वंतर और युग की अवधारणाएँ समय की

विशाल गणना को दर्शाती हैं। यह भारतीय चिंतन की वैज्ञानिक दृष्टि को प्रकट करता है।

खगोल एवं काल गणना
पुराणों में ग्रहों, नक्षत्रों और कालचक्र का उल्लेख मिलता है। यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय समाज खगोल और समय विज्ञान से परिचित था। आज भी खगोलीय गणना इसके आधार पर होती है ।

पर्यावरण संरक्षण
नदियों, वृक्षों, पर्वतों और पशुओं को पूजनीय मानना भारतीय पर्यावरण दर्शन का प्रमाण है। पुराणों में प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की शिक्षा दी गई है। प्रकृति शिक्षण पूर्व में भी अस्तित्व में था ।

सामाजिक एवं नैतिक मूल्य
पुराणों में सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक नैतिक मूल्यों का व्यापक वर्णन मिलता है। सत्य, अहिंसा, करुणा, क्षमा, सेवा और कर्तव्यनिष्ठा को जीवन का आधार बताया गया है।
राम, कृष्ण, प्रह्लाद और ध्रुव जैसे चरित्र आदर्श सामाजिक व्यवहार के प्रतीक हैं। नारी को शक्ति और सम्मान का स्वरूप माना गया है, जो देवी परम्परा में स्पष्ट दिखाई देता है।

संस्कृति रक्षण:
पुराणों में भारतीय संस्कृति की निरंतरता सुरक्षित है। तीर्थ यात्रा, पर्व-उत्सव, लोक परंपराएँ, कला और संगीत के संकेत पुराणों में मिलते हैं।
ये ग्रंथ भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति हैं, जिनके माध्यम से सांस्कृतिक पहचान पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होती रही है।

ऐतिहासिक महत्त्व
यद्यपि पुराण इतिहास को आधुनिक अर्थों में प्रस्तुत नहीं करते, फिर भी वंशावलियों और राजाओं के वर्णन से ऐतिहासिक चेतना प्राप्त होती है। विष्णु और वायु पुराण में प्राचीन राजवंशों का उल्लेख मिलता है, जो भारतीय इतिहास के अध्ययन में सहायक है।

पुराणों में ज्ञान परम्परा के प्रमुख आधार स्तंभ
(क) दार्शनिक ज्ञान
पुराणों में अद्वैत, भक्ति और कर्म सिद्धांत का समन्वय मिलता है। आत्मा, परमात्मा, माया और मोक्ष जैसे गूढ़ विषय सरल कथाओं के माध्यम से समझाए गए हैं।
(ख) वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक ज्ञान
सृष्टि की उत्पत्ति (Cosmology)
समय की अवधारणा (युग, कल्प)
पर्यावरण संरक्षण, वृक्ष पूजा, जल संरक्षण
(ग) सामाजिक एवं नैतिक मूल्य
पुराण सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा, परिवार व्यवस्था और सामाजिक कर्तव्यों पर बल देते हैं।
(घ) ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान
राजवंशों का वर्णन, तीर्थ परम्परा, उत्सव, लोकजीवन और परंपराएँ पुराणों में सुरक्षित हैं।

पुराण भारतीयज्ञान के विश्वकोश के रूप में
पुराणों में ज्ञान की व्यापक प्रणालियाँ समाहित हैं और ये केवल पंचलक्षणों तक ही सीमित नहीं हैं। पुराणों की विषयसूची पर सरसरी नज़र डालने या विकिपीडिया पर पुराणों के विषय-सारांश देखने से ही इनके ज्ञान के विशाल भंडार का पता चलता है। इनमें वास्तुकला, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कूटनीति और शासन, दर्शन, साहित्य, व्याकरण, कविता, संगीत, भूगोल, भूविज्ञान, रोग और औषधियाँ, पोषण और भोजन, मंदिर और तीर्थ स्थल, योग आदि विषय शामिल हैं! कुछ पुराणों में कुछ विषयों पर अधिक विस्तार से चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड पुराण में सृष्टि का विस्तृत वर्णन है। इस प्रकार प्रत्येक पुराण की अपनी कथा शैली और विषय-वस्तु पर विशेष ध्यान केंद्रित करने का तरीका है।

प्रमुख पुराणों में ज्ञान परम्परा
भागवत पुराण: भक्ति, दर्शन और मानव मूल्यों का उत्कृष्ट समन्वय।
विष्णु पुराण: सृष्टि, भूगोल, इतिहास और धर्म का व्यवस्थित विवेचन।
मार्कण्डेय पुराण: देवी उपासना, नारी शक्ति और सामाजिक चेतना का प्रतिपादन।
विष्णु पुराण – सृष्टि और इतिहास
वायु पुराण – भूगोल और वंशावली

नारद (बृहन्नारदीय) पुराण: इसे महापुराण भी कहा जाता है। इसमें पुराण के 6 लक्षण घटित नहीं होते हैं। इसमें वैष्णवों के उत्सवों और व्रतों का वर्णन है। इसमें 2 खण्ड है : (क) पूर्व खण्ड में 125 अध्याय और (ख) उत्तर-खण्ड में 82अध्याय हैं। इसमें 18000 श्लोक हैं। इसके विषय मोक्ष, धर्म, नक्षत्र, एवं कल्प का निरूपण, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, गृहविचार, मन्त्रसिद्धि,, वर्णाश्रम-धर्म, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि का वर्णन है।

वायुपुराण : इसमें विशेषकर शिव का वर्णन किया गया है, अतः इस कारण इसे "शिवपुराण" भी कहा जाता है। एक शिवपुराण पृथक् भी है। इसमें 112अध्याय, 11000श्लोक हैं। इस पुराण का प्रचलन मगध-क्षेत्र में बहुत था। इसमें गया-माहात्म्य है। इसमें कुल चार भाग है : (क) प्रक्रियापाद – (अध्याय—१-६), (ख) उपोद्घात : (अध्याय-७ –६४), (ग) अनुषङ्गपादः–(अध्याय—६५–९९), (घ) उपसंहारपादः–(अध्याय—१००-११२)। इसमें सृष्टिक्रम, भूगो, खगोल, युगों, ऋषियों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, ऋषिवंशों,, वेद की शाखाओं, संगीतशास्त्र और शिवभक्ति का विस्तृत निरूपण है

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुराणों की प्रासंगिकता: वर्तमान समय में हमने बिग हिस्ट्री जैसे कथा-आधारित पाठ्यक्रम देखे हैं, जो विभिन्न विषयों के ज्ञान को एक सुसंगत कथा या कहानी के रूप में संश्लेषित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे पाठ्यक्रमों ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है और व्यापक रूप से अपनाए गए हैं। भारतीय संदर्भ में, कई हज़ार साल पहले, इतिहास और पुराणों ने कथा-आधारित दृष्टिकोण अपनाया था और विभिन्न ज्ञान प्रणालियों को अपनी कहानियों में एकीकृत किया था। वे मानव-केंद्रित दृष्टिकोण नहीं अपनाते हैं और उनमें अन्य प्राणियों का भी वर्णन मिलता है। उनमें अपनाई गई समयावधि विशाल है और समय के प्रति हमारी धारणा और समझ को चुनौती देती है। पुराणों में निहित सूचनाओं की विविधता और जटिलता उन्हें ज्ञान का एक अद्भुत और आकर्षक स्रोत बनाती है। वे पूछताछ-आधारित दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं और प्रश्नों और उत्तरों की एक श्रृंखला के रूप में आगे बढ़ते हैं। कुछ अध्याय सिद्धांत और अवधारणाओं का विस्तार से वर्णन करते हैं, जबकि अन्य में ज्ञान कहानियों के रूप में निहित है। पुराणों को पढ़ते समय हमें वे अपेक्षित प्रश्न या शंकाएँ भी मिलती हैं जिनके उत्तर हमें पुराणों में मिल सकते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुराण विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, चिकित्सा और आधुनिक ज्ञान प्रणालियों में अध्ययन किए जाने वाले अन्य विषयों का ज्ञानकोश हैं। यद्यपि हम आधुनिक विज्ञानों के विश्वदृष्टिकोण और ज्ञान से परिचित हैं, पुराण आम लोगों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों और विश्वदृष्टिकोण की विशिष्ट धाराओं का अवलोकन करने और उनमें गहराई से उतरने के लिए एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों के विभिन्न विषयों पर जिज्ञासु मन के लिए वे सूचना का एक उत्कृष्ट स्रोत हैं। जबकि वेदों के अध्ययन और समझने के लिए एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है, श्रद्धा और रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति पुराणों का अध्ययन शुरू कर सकता है। पुराणों को पढ़ना केवल कहानियाँ पढ़ना या जानकारी प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है जो स्वयं के लिए अर्थ उत्पन्न करता है।आधुनिक युग में जब भौतिकता और उपभोक्तावाद बढ़ रहा है, तब पुराणों की ज्ञान परम्परा मानव को संतुलन, नैतिकता और पर्यावरण संरक्षण की दिशा दिखाती है। मानसिक तनाव, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक विस्मृति की समस्याओं का समाधान पुराणों के ज्ञान में निहित ह।हम महर्षि व्यास और गुरु परंपरा का आशीर्वाद प्राप्त करें ताकि हम इस अद्भुत ज्ञान और परंपरा के सूत्रधार बन सकें।

संदर्भ

[1] संस्कृत शब्दकोश: वामन शिवराम आप्टे
[2] निरुक्त यास्क 3.19
[3] पुराण विमर्श: बलदेव उपाध्याय
[4] अग्निपुराण
[5] वायु पुराण
[6] नारद पुराण
[7] ब्रह्मांड पुराण खंड 1 अध्याय 1
[8] विष्णु पुराण अध्याय 2 और 3
[9] शतपथ ब्राह्मण 14.3.3.13
[10] छान्दोग्योपनिषद 7.1.2
[11] विष्णुधर्मोत्तरपुराण उपपुराण : चित्रसूत्र अध्याय
[12] https://www.wisdomlib.org/definition/purana
[13] https://en.wikipedia.org/wiki/पुराण
[14] पुराणों पर स्वामी शिवानंद: https:// www.sivandaonline.org //?cmd=displaysection§ion_id=574
[15] https://www.wisdomlib.org/definition/pancalakshana
[16] https://suryasatya.wordpress.com/tag/panchalakshana/
[17] पौराणिक विश्वकोश वेट्टम मणि
[18] https://www.hindupost.in/dharma-religion/puranas-the-fifth-vedas/